

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **JULY 6, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दौरान भारत में राष्ट्रवाद के उदय के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- केवल एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय ही बिखरी हुई क्षेत्रीय राजनीतिक शिकायतों को एक अखिल भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में बदलने के लिए पर्याप्त था।
- रेलवे, डाक सेवाओं और स्थानीय (वर्नाकुलर) प्रेस के विस्तार ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में एक साझा राजनीतिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- केवल एक
- दोनों कथन
- कोई भी कथन नहीं
- दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

व्याख्या:

- कथन 1 गलत है।** यद्यपि शिक्षित मध्यम वर्ग ने वैचारिक नेतृत्व प्रदान किया, लेकिन राष्ट्रवाद का उदय केवल इसी वर्ग के कारण नहीं हुआ था। औपनिवेशिक शासन के तहत आर्थिक शोषण, राजनीतिक एकीकरण, आधुनिक शिक्षा, सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, संचार नेटवर्क और प्रेस ने सामूहिक रूप से राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया।
- कथन 2 सही है।** रेलवे, टेलीग्राम, डाक सेवाओं और विशेष रूप से स्थानीय प्रेस ने राजनीतिक संचार, राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार और भौगोलिक रूप से बिखरे हुए क्षेत्रों के एकीकरण को सुगम बनाया।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सी पारिस्थितिकी तंत्र सेवा (ecosystem service) मुख्य रूप से दीर्घकालिक जैविक संचयन (biological sequestration) के माध्यम से वायुमंडलीय कार्बन सांद्रता को नियंत्रित करती है?

- प्रवाल भित्ति (कोरल रीफ) का निर्माण
- मैंग्रोव वन
- अल्पाइन घास के मैदान
- मरुस्थलीय झाड़ीदार वनस्पति

उत्तर: (b) मैंग्रोव वन

व्याख्या:

- मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया के सबसे कुशल 'ब्लू कार्बन' (blue carbon) पारिस्थितिकी तंत्रों में से हैं।
- ये बायोमास (जैवभार) के साथ-साथ गहरी, जलभराव वाली मिट्टी में कार्बन की भारी मात्रा को संग्रहीत करते हैं, जहाँ अपघटन (decomposition) की प्रक्रिया अत्यंत धीमी होती है।
- प्रवाल भित्तियाँ मुख्य रूप से तटीय सुरक्षा और समुद्री जैव विविधता प्रदान करती हैं, न कि बड़े पैमाने पर कार्बन संचयन।
- अल्पाइन घास के मैदान और मरुस्थलीय वनस्पति तुलनात्मक रूप से कार्बन की बहुत कम मात्रा का भंडारण करते हैं।

प्रश्न 3. आर्थिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि का अनिवार्य रूप से यह अर्थ है कि मानव विकास संकेतकों में सुधार हुआ है।
2. सतत (सस्टेनेबल) आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि वर्तमान विकास से भविष्य की पीढ़ियों के लिए उपलब्ध उत्पादक क्षमता से समझौता न हो।
3. समावेशी विकास (Inclusive growth) मुख्य रूप से अवसरों के विस्तार और यह सुनिश्चित करने पर जोर देता है कि विकास के लाभ समाज के विभिन्न वर्गों में साझा किए जाएं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** केवल सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि साक्षरता, स्वास्थ्य, पोषण या लैंगिक समानता में सुधार की गारंटी नहीं देती है। मानव विकास, विकास की गुणवत्ता और उसके वितरण पर निर्भर करता है।
- **कथन 2 सही है।** सतत विकास भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता को कम किए बिना वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने पर जोर देता है।
- **कथन 3 सही है।** समावेशी विकास आर्थिक अवसरों में व्यापक भागीदारी और विकास के लाभों के न्यायसंगत वितरण की मांग करता है।

प्रश्न 4. भारतीय संसद के कामकाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. संसद मुख्य रूप से बजटीय प्रक्रिया के माध्यम से कार्यपालिका पर वित्तीय नियंत्रण रखती है।

2. संसदीय समितियां आमतौर पर सदन के पटल पर होने वाली बहसों की तुलना में विधायी और वित्तीय मामलों की अधिक विस्तृत जांच की अनुमति देती हैं।
3. प्रत्येक संसदीय समिति सरकार पर कानूनी रूप से बाध्यकारी सिफारिशें सौंपती है।
4. मंत्रिपरिषद का सामूहिक उत्तरदायित्व एक संवैधानिक तंत्र है जो लोकप्रिय रूप से निर्वाचित सदन (लोकसभा) के प्रति कार्यपालिका की जवाबदेही सुनिश्चित करता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** संसद बजट, अनुदान की मांगों, विनियोग विधेयकों आदि पर चर्चा के माध्यम से सार्वजनिक वित्त को नियंत्रित करती है।
- **कथन 2 सही है।** संसदीय समितियां विस्तृत छानबीन करती हैं जो अक्सर सदन की बहसों के दौरान संभव नहीं हो पाती है।
- **कथन 3 गलत है।** समितियों की सिफारिशें प्रेरक और प्रभावशाली होती हैं लेकिन सरकार पर कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं होती हैं।
- **कथन 4 सही है।** अनुच्छेद 75(3) के तहत, मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): मानवीय गतिविधियाँ किसी नदी बेसिन की प्राकृतिक जल निकासी (ड्रेनेज) विशेषताओं को महत्वपूर्ण रूप से संशोधित कर सकती हैं।

कारण I: शहरीकरण अभेद्य (impervious) सतहों को बढ़ाता है, जिससे पानी का रिसाव (infiltration) कम हो जाता है और सतही जल का बहाव (surface runoff) बढ़ जाता है।

कारण II: जलाशयों, तटबंधों और नदी बेसिन स्थानांतरण नहरों (inter-basin transfer canals) का निर्माण नदी के जल विसर्जन (discharge) के समय और वितरण को बदल सकता है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

- (a) अभिकथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं और दोनों अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं।
- (b) अभिकथन सही है, कारण I सही है लेकिन कारण II गलत है।

(c) अभिकथन गलत है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

(d) अभिकथन सही है, लेकिन न तो कारण I और न ही कारण II अभिकथन की व्याख्या करता है।

उत्तर: (a) अभिकथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं और दोनों अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं।

व्याख्या:

- **अभिकथन सही है।** मानव हस्तक्षेप नदी प्रणालियों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख भू-आकृतिक (geomorphic) और जलविज्ञानी (hydrological) बल बन गया है।
- **कारण I सही है।** शहरीकरण पारगम्य (permeable) भूमि को सड़कों और इमारतों से बदल देता है, जिससे सतही बहाव बढ़ जाता है, भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है और बाढ़ की चरम सीमा बढ़ जाती है।
- **कारण II सही है।** जलाशय नदी के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, तटबंध प्राकृतिक बाढ़ के मैदानों को सीमित करते हैं, और बेसिन-स्थानांतरण जल निकासी प्रणालियों में पानी को पुनर्वितरित करते हैं।
- सामूहिक रूप से, दोनों कारण व्यापक रूप से यह स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार मानवजनित (anthropogenic) गतिविधियाँ नदी घाटियों के जलविज्ञानी व्यवहार को संशोधित करती हैं, जिससे विकल्प (a) सबसे उपयुक्त उत्तर बन जाता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. भारत में दलबदल विरोधी कानून (Anti-Defection Law) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- सदन का कोई मनोनीत (nominated) सदस्य अपनी सीट ग्रहण करने के तुरंत बाद किसी भी राजनीतिक दल में शामिल होने पर दसवीं अनुसूची के तहत अयोग्यता का भागी बन जाता है।
- दसवीं अनुसूची के तहत अध्यक्ष (Speaker) का निर्णय केवल निर्णय लिए जाने के बाद ही न्यायिक समीक्षा के अधीन होता है, न कि उस चरण में जब कार्यवाही लंबित हो।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) कोई भी कथन नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** एक मनोनीत सदस्य अपनी सीट ग्रहण करने के छह महीने के भीतर बिना अयोग्य घोषित हुए किसी राजनीतिक दल में शामिल हो सकता है। इस अवधि (छह महीने) के बीत जाने के बाद शामिल होने पर ही दसवीं अनुसूची के तहत अयोग्यता की कार्रवाई होती है।
- **कथन 2 सही है।** *किहोतो होलोहन बनाम जाचिल्हु (1992)* मामले के बाद, अध्यक्ष का अंतिम निर्णय न्यायिक समीक्षा के अधीन है। न्यायालय आमतौर पर कार्यवाही लंबित रहने के दौरान तब तक हस्तक्षेप नहीं करते हैं, जब तक कि क्षेत्राधिकार संबंधी त्रुटियों या संवैधानिक उल्लंघनों से जुड़े असाधारण मामले न हों।
- संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) अक्सर "लंबित कार्यवाही" और "अंतिम निर्णय" के बीच के अंतर पर प्रश्न पूछता है, जो कथन 2 को विश्लेषणात्मक रूप से महत्वपूर्ण बनाता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत के लिए हाल ही में चर्चा में रहे एयर कुशन वाहनों (ACVs - Air Cushion Vehicles) के रणनीतिक महत्व की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?

- (a) ये केवल उथले अंतर्देशीय जल निकायों पर काम करते हैं और भूमि पर नहीं चल सकते।
 (b) ये पारंपरिक बुनियादी ढांचे पर न्यूनतम निर्भरता के साथ पानी, दलदल, कीचड़दार तटों (mudflats) और भूमि पर यात्रा करने में सक्षम हैं।
 (c) ये मुख्य रूप से पनडुब्बी रोधी युद्ध (anti-submarine warfare) के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी के नीचे के स्वायत्त वाहन हैं।
 (d) ये विशेष रूप से उच्च ऊंचाई वाले लॉजिस्टिक्स (रसद) के लिए डिज़ाइन किए गए विशेष विमान हैं।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- एयर कुशन वाहन (जिन्हें होवरक्राफ्ट भी कहा जाता है) संपीड़ित हवा (compressed air) के कुशन पर चलते हैं।
- ये पानी, समुद्र तटों, दलदलों, कीचड़दार मैदानों, आर्द्रभूमि (wetlands) और ठोस भूमि पर काम कर सकते हैं, जो इन्हें निम्नलिखित कार्यों के लिए अत्यधिक उपयोगी बनाता है:
 - तटीय सुरक्षा,
 - आपदा प्रतिक्रिया,
 - द्वीपीय लॉजिस्टिक्स (द्वीप रसद),
 - उभयचर (amphibious) सैन्य अभियान।
- इनकी बहु-इलाका (multi-terrain) क्षमता इन्हें पारंपरिक नावों या उभयचर वाहनों से अलग करती है।

प्रश्न 3. सिकल सेल रोग (SCD - Sickle Cell Disease) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एक आनुवंशिक (genetic) विकार है जो हीमोग्लोबिन अणु को प्रभावित करने वाले म्यूटेशन (उत्परिवर्तन) के कारण होता है।
2. केवल एक दोषपूर्ण जीन ले जाने वाले व्यक्ति में अनिवार्य रूप से इस बीमारी के गंभीर नैदानिक लक्षण विकसित होते हैं।
3. प्रारंभिक स्क्रीनिंग कार्यक्रमों का उद्देश्य समय पर निदान, परामर्श और प्रबंधन के माध्यम से बीमारी के बोझ को कम करना है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
 (b) केवल दो
 (c) सभी तीन
 (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** सिकल सेल रोग 'HBB' जीन में म्यूटेशन के कारण होता है, जिससे असामान्य हीमोग्लोबिन (HbS) का उत्पादन होता है।

- **कथन 2 गलत है।** सिकल सेल ट्रेट (Sickle Cell Trait - केवल एक दोषपूर्ण जीन वाले व्यक्ति) वाले लोग आमतौर पर लक्षणहीन (asymptomatic) होते हैं या अत्यधिक विषम परिस्थितियों में ही उनमें हल्के लक्षण दिखाई देते हैं।
- **कथन 3 सही है।** भारत का राष्ट्रीय सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन प्रारंभिक स्क्रीनिंग (जांच), परामर्श और उपचार पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यूपीएससी अक्सर 'सिकल सेल रोग' (Sickle Cell Disease) और 'सिकल सेल ट्रेट' (Sickle Cell Trait) के बीच अंतर स्पष्ट करने वाले प्रश्न पूछता है।

प्रश्न 4. कोयले से अमोनियम नाइट्रेट परियोजना (Coal-to-Ammonium Nitrate Project) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस परियोजना का उद्देश्य घरेलू कोयले को मूल्य संवर्धित (value-added) औद्योगिक रसायनों में परिवर्तित करके आयात निर्भरता को कम करना है।
2. इस परियोजना के तहत उत्पादित अमोनियम नाइट्रेट का उपयोग केवल कृषि में होता है, खनन या बुनियादी ढांचे में नहीं।
3. इस परियोजना के तहत परिकल्पित उत्पादन श्रृंखला में कोयला गैसीकरण (Coal gasification) एक महत्वपूर्ण मध्यवर्ती चरण है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** यह परियोजना स्वदेशी कोयले को डाउनस्ट्रीम रासायनिक उत्पादों में परिवर्तित करके आयात प्रतिस्थापन (import substitution) की मांग करती है।
- **कथन 2 गलत है।** नियामक नियंत्रणों के अधीन, अमोनियम नाइट्रेट के व्यापक अनुप्रयोग हैं, जिनमें उर्वरक, खनन विस्फोटक, सिविल इंजीनियरिंग और बुनियादी ढांचा गतिविधियां शामिल हैं।
- **कथन 3 सही है।** कोयले को पहले कोयला गैसीकरण के माध्यम से सिंथेसिस गैस (syngas) में परिवर्तित किया जाता है, जिसे बाद में अमोनिया और अमोनियम नाइट्रेट में संसाधित किया जाता है।
- यूपीएससी केवल तथ्यात्मक याद रखने के बजाय औद्योगिक मूल्य श्रृंखलाओं (industrial value chains) की समझ का परीक्षण कर सकता है।

प्रश्न 5. द रिटर्न रेगुलेशन (The Return Regulation) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह विनियमन मुख्य रूप से उन व्यक्तियों को वापस भेजने के लिए एक साझा कानूनी ढांचा स्थापित करना चाहता है जिनके पास संबंधित क्षेत्राधिकार में रहने का कानूनी अधिकार नहीं है।
2. यह विनियमन प्रवर्तन उपायों को शुरू करने से पहले स्वैच्छिक वापसी (voluntary return) की संभावना को पूरी तरह से समाप्त करता है।
3. यह रिटर्न (वापसी) के निर्णयों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सदस्य प्राधिकारियों के बीच अधिक समन्वय की मांग करता है।
4. इस विनियमन का उद्देश्य रिटर्न प्रक्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करना है, न कि व्यक्तिगत राज्यों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले आव्रजन (immigration) नियंत्रण को पूरी तरह से बदलना।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** प्रस्तावित रिटर्न रेगुलेशन का उद्देश्य अधिक प्रभावी और सुसंगत रिटर्न प्रणाली बनाना है।
- **कथन 2 गलत है।** स्वैच्छिक वापसी (voluntary return) अभी भी एक महत्वपूर्ण घटक बनी हुई है क्योंकि यह अक्सर जबरन वापसी (forced return) की तुलना में अधिक मानवीय और लागत प्रभावी होती है।
- **कथन 3 सही है।** बेहतर समन्वय और रिटर्न निर्णयों की पारस्परिक मान्यता इसके प्रमुख उद्देश्य हैं।
- **कथन 4 सही है।** आव्रजन काफी हद तक राज्यों के अधिकार क्षेत्र में बना हुआ है, हालांकि सामान्य नियमों के माध्यम से प्रक्रियाओं में सामंजस्य स्थापित किया जाता है।

(मानचित्र आधारित)

प्रश्न 6. अक्सर समाचारों में रहने वाला 'कच्चातीवू द्वीप' (Katchatheevu Island) निम्नलिखित में से किस जल निकाय में स्थित है?

- (a) मन्नार की खाड़ी
- (b) पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait)
- (c) कच्छ की खाड़ी
- (d) अंडमान सागर

उत्तर: (b) पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait)

व्याख्या:

- कच्चातीवू एक छोटा, निर्जन द्वीप है जो तमिलनाडु (भारत) और उत्तरी श्रीलंका के बीच पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) में स्थित है।
- इसे 1974 के भारत-श्रीलंका समुद्री सीमा समझौते के तहत श्रीलंका को सौंप दिया गया था।
- इस द्वीप पर कोई स्थायी आबादी नहीं है, लेकिन यह निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:
 - पारंपरिक मछली पकड़ने के अधिकार,
 - समुद्री सीमा के मुद्दे,
 - वार्षिक सेंट एंटनी चर्च उत्सव, जिसमें भारत और श्रीलंका दोनों के श्रद्धालु भाग लेते हैं।
- यूपीएससी अक्सर मानचित्र से जुड़े प्रश्नों में उम्मीदवारों से पाक जलडमरूमध्य, मन्नार की खाड़ी, पाक खाड़ी (Palk Bay) और आस-पास की समुद्री विशेषताओं के बीच अंतर स्पष्ट करने के लिए कहता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन (GS) प्रश्नपत्र-1 | इतिहास (History)

प्रश्न: 1857 का विद्रोह न तो केवल एक सिपाही विद्रोह था और न ही पहला पूर्ण विकसित राष्ट्रीय आंदोलन। 1857 के विद्रोह की प्रकृति का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक | 250 शब्द)

मॉडल उत्तर (Model Answer)

परिचय (Introduction)

1857 का विद्रोह भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ पहला बड़े पैमाने पर सशस्त्र प्रतिरोध था। एनफील्ड राइफल के कारतूसों की शुरूआत से भड़के इस विद्रोह ने देखते ही देखते एक व्यापक राजनीतिक और सामाजिक विद्रोह का रूप ले लिया, जिसमें सैनिक, बेदखल शासक, किसान, कारीगर और जमींदार वर्ग के कुछ हिस्से शामिल थे। जहां ब्रिटिश इतिहासकारों ने इसे केवल एक "सिपाही म्यूटनी" (सिपाही विद्रोह) कहा, वहीं राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसे "स्वतंत्रता का पहला युद्ध" बताया। एक संतुलित मूल्यांकन यह दर्शाता है कि इसमें एक सैन्य विद्रोह और एक व्यापक उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलन दोनों के लक्षण मौजूद थे, हालांकि यह आधुनिक राष्ट्रवाद के पैमाने पर पूरी तरह खरा नहीं उतरता था।

विद्रोह की प्रकृति (Nature of the Revolt)

यह विद्रोह एक सैन्य तख्तापलट के रूप में शुरू हुआ था, लेकिन धीरे-धीरे इसने बहु-आयामी रूप धारण कर लिया:

- **सैन्य चरित्र:** इसकी शुरुआत मेरठ में तैनात सिपाहियों के बीच हुई थी। इसका तात्कालिक कारण एनफील्ड राइफल कारतूस का विवाद था। दीर्घकालिक शिकायतों में वेतन, पदोन्नति और विदेशी सेवा नियमों में भेदभाव शामिल थे।
- **राजनीतिक चरित्र:** इस विद्रोह को उन कई विस्थापित शासकों का समर्थन मिला जिनके राजनीतिक हित ब्रिटिश विस्तारवादी नीतियों से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए थे। अवध के विलय ने व्यापक असंतोष पैदा किया। 'व्यपगत का सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) ने कई रियासतों को अलग-थलग कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, बेगम हजरत महल और कुंवर सिंह जैसे नेता प्रमुख हस्तियों के रूप में उभरे।
- **आर्थिक चरित्र:** औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने गहरे कृषि संकट को जन्म दिया था। अत्यधिक भू-राजस्व की मांग, पारंपरिक हस्तशिल्प का पतन, किसानों और कारीगरों का शोषण, तथा पारंपरिक अभिजात वर्ग के विस्थापन के परिणामस्वरूप कई नागरिक इस विद्रोह में शामिल हो गए।
- **सामाजिक और धार्मिक कारक:** भारतीय रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप के डर ने ब्रिटिश विरोधी भावना को मजबूत किया। ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ, सामाजिक सुधार कानून और जबरन धर्म परिवर्तन की अफवाहों ने आग में घी का काम किया।

इसे एक पूर्ण विकसित राष्ट्रीय आंदोलन क्यों नहीं कहा जा सकता (Why it cannot be termed a fully developed National Movement)

अपने व्यापक पैमाने के बावजूद, कई सीमाओं ने इस विद्रोह को एक वास्तविक राष्ट्रीय आंदोलन बनने से रोक दिया:

- एक साझा राजनीतिक विचारधारा का अभाव था।
- एकीकृत राष्ट्रीय नेतृत्व की कमी थी।
- विभिन्न क्षेत्रों के क्षेत्रीय उद्देश्य अलग-अलग थे।
- दक्षिण और पूर्वी भारत का एक बड़ा हिस्सा इससे अछूता रहा।
- कई भारतीय शासकों और समुदायों ने सक्रिय रूप से अंग्रेजों का समर्थन किया।
- एक स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य (Nation-State) की कोई संगठित दूरदृष्टि नहीं थी।

ऐतिहासिक महत्व (Historical Significance)

अपनी विफलता के बावजूद, इस विद्रोह ने ब्रिटिश नीति को मौलिक रूप से बदल दिया:

- इसने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया।
- भारत सरकार अधिनियम, 1858 के तहत सत्ता सीधे ब्रिटिश क्राउन (राजशाही) को हस्तांतरित कर दी गई।
- भारतीय सेना का पुनर्गठन किया गया।
- सामाजिक और धार्मिक हस्तक्षेपों में अत्यधिक सावधानी बरती जाने लगी।
- यह औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध का एक स्थायी प्रतीक बन गया।

निष्कर्ष (Conclusion)

1857 का विद्रोह बिखरे हुए क्षेत्रीय प्रतिरोध से एक व्यापक उपनिवेशवाद-विरोधी चेतना की ओर एक निर्णायक संक्रमण (transition) का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि इसमें बाद के स्वतंत्रता आंदोलन जैसी वैचारिक एकता और संगठनात्मक शक्ति की कमी थी, फिर भी इसने औपनिवेशिक शासन की कमजोरियों को उजागर किया और भारतीय राष्ट्रवाद की मनोवैज्ञानिक नींव रखी। इसलिए, इसे न तो केवल एक सिपाही विद्रोह के रूप में देखा जाना चाहिए और न ही एक पूर्ण विकसित राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में, बल्कि इसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण अग्रदूत के रूप में देखा जाना चाहिए।

सामान्य अध्ययन (GS) प्रश्नपत्र-2 | राजव्यवस्था एवं शासन (Polity & Governance)

प्रश्न: गठबंधन की राजनीति ने प्रतिनिधित्व को बढ़ाकर भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया है, लेकिन इसने शासन और नीति-निर्माण को जटिल भी बना दिया है। समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक | 250 शब्द)

मॉडल उत्तर (Model Answer)

परिचय (Introduction)

1980 के दशक के उत्तरार्ध में एक-दल के प्रभुत्व के पतन के बाद गठबंधन की राजनीति भारतीय लोकतंत्र की एक परिभाषित विशेषता के रूप में उभरी। यह शासन में बहु-राजनीतिक अभिनेताओं की भागीदारी को सक्षम करके भारत की विशाल सामाजिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधता को दर्शाता है। जहां एक ओर गठबंधन सरकारों ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को गहरा किया है और संघवाद को मजबूत किया है, वहीं दूसरी ओर उन्होंने राजनीतिक स्थिरता और नीति कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियां भी पेश की हैं।

गठबंधन की राजनीति ने भारतीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया है (How Coalition Politics has strengthened Indian Democracy)

गठबंधन सरकारों ने कई मायनों में सकारात्मक योगदान दिया है:

- **व्यापक राजनीतिक प्रतिनिधित्व:** क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। हाशिए पर मौजूद समुदायों को अधिक राजनीतिक आवाज मिलती है। नीति निर्माण में विविध हितों का प्रतिनिधित्व होता है।
- **संघवाद को मजबूती:** गठबंधन सरकारें केंद्र और राज्यों के बीच अधिक परामर्श को बढ़ावा देती हैं। क्षेत्रीय आकांक्षाओं पर राष्ट्रीय ध्यान जाता है। राज्य-विशिष्ट विकासात्मक चिंताओं को प्रमुखता मिलती है, जिससे सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism) मजबूत होता है।

- **आम सहमति आधारित शासन:** बहुसंख्यकवादी सरकारों के विपरीत, गठबंधन सरकारों को बड़े नीतिगत निर्णयों से पहले बातचीत और व्यापक परामर्श की आवश्यकता होती है। यह लोकतांत्रिक वैधता में सुधार करता है।
- **सत्ता के संकेंद्रण के खिलाफ नियंत्रण:** गठबंधन के भागीदार दल कार्यपालिका के मनमाने निर्णय लेने पर एक संस्थागत रोक (checks and balances) के रूप में कार्य करते हैं।

गठबंधन की राजनीति से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges associated with Coalition Politics)

अपने लोकतांत्रिक लाभों के बावजूद, गठबंधन की राजनीति गंभीर शासन चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है:

- **नीतिगत पंगुता (Policy Paralysis):** महत्वपूर्ण सुधारों में देरी हो सकती है। गठबंधन के भागीदार अक्सर कठिन आर्थिक निर्णयों पर 'वीटो' लगा देते हैं (सहमति नहीं देते)।
- **राजनीतिक अस्थिरता:** समर्थन वापस लेने का डर सरकार के अस्तित्व के लिए खतरा बना रहता है। बार-बार होने वाली सौदेबाजी नीतियों की निरंतरता को प्रभावित करती है।
- **शासन में समझौता:** प्रशासनिक योग्यता के बजाय राजनीतिक समायोजन (तुष्टीकरण) के लिए मंत्रालय के विभागों का वितरण किया जा सकता है। दीर्घकालिक सुधारों पर लोकलुभावन उपाय हावी हो सकते हैं।
- **जवाबदेही में कमी:** गठबंधन सरकारें कभी-कभी जिम्मेदारी को आपस में बांट देती हैं, जिससे नीतिगत विफलताओं के लिए किसी एक की जवाबदेही तय करना मुश्किल हो जाता है।

आगे की राह (Way Forward)

गठबंधन सरकारों के कामकाज में सुधार के लिए:

- संसदीय समितियों को मजबूत किया जाए।
- साझा कार्यक्रमों के आधार पर चुनाव-पूर्व गठबंधनों को प्रोत्साहित किया जाए।
- दलबदल विरोधी कानून में आवश्यक सुधार किए जाएं।
- आंतरिक-पार्टी लोकतंत्र (intra-party democracy) को बढ़ावा दिया जाए।
- केंद्र-राज्य समन्वय के लिए संस्थागत तंत्र को बढ़ाया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

गठबंधन की राजनीति भारत के बहुलवादी लोकतंत्र का एक स्वाभाविक परिणाम है। हालांकि यह शासन को जटिल बना सकती है, लेकिन यह समावेशिता, संघीय संतुलन और व्यापक राजनीतिक भागीदारी भी सुनिश्चित करती है। इसका उद्देश्य गठबंधन सरकारों से बचना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन संस्थागत तंत्रों में सुधार करना होना चाहिए जो उन्हें लोकतांत्रिक जवाबदेही को बनाए रखते हुए कुशलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम बनाते हैं।

प्रश्न: भूमि एक सीमित संसाधन है जो आर्थिक विकास और पारिस्थितिक स्थिरता दोनों को एक साथ सहारा देता है। भारत में भूमि संसाधनों के महत्व की चर्चा कीजिए और उनके सतत प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियों का परीक्षण कीजिए। (15 अंक | 250 शब्द)

मॉडल उत्तर (Model Answer)

परिचय (Introduction)

भूमि भारत के पास उपलब्ध सबसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। यह कृषि, उद्योगों, बुनियादी ढांचे, वनों और मानव बस्तियों के लिए भौतिक आधार प्रदान करती है। हालांकि, बढ़ते जनसंख्या दबाव, शहरीकरण, औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन ने भूमि संसाधनों के क्षरण को तेज कर दिया है, जिससे सतत भूमि प्रबंधन (Sustainable Land Management) एक महत्वपूर्ण विकासात्मक प्राथमिकता बन गया है।

भूमि संसाधनों का महत्व (Importance of Land Resources)

भूमि भारत के आर्थिक विकास और पर्यावरणीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है:

- कृषि विकास:** यह खाद्य सुरक्षा का समर्थन करती है। भारत के लगभग आधे कार्यबल को आजीविका प्रदान करती है। कृषि-आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित करती है।
- औद्योगिक और बुनियादी ढांचा विकास:** उद्योगों, परिवहन नेटवर्क, शहरी विस्तार, ऊर्जा परियोजनाओं और खनन गतिविधियों के लिए भूमि अत्यंत आवश्यक है।
- पारिस्थितिक कार्य (Ecological Functions):** स्वस्थ भूमि पारिस्थितिकी तंत्र कई पर्यावरणीय सेवाएँ प्रदान करते हैं, जैसे—कार्बन संचयन (Carbon sequestration), भूजल पुनर्भरण, जैव विविधता संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना और बाढ़ नियंत्रण।
- सामाजिक महत्व:** भूमि ग्रामीण रोजगार, सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक सुरक्षा और जनजातीय तथा वन-आश्रित समुदायों के लिए आजीविका के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करती है।

प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges)

सतत भूमि प्रबंधन सुनिश्चित करने में भारत कई बाधाओं का सामना कर रहा है:

- भूमि क्षरण (Land Degradation):** मृदा अपरदन (Soil erosion), लवणीकरण (Salinisation), जलभराव (Waterlogging) और मरुस्थलीकरण (Desertification) की समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं।
- तीव्र शहरीकरण:** शहरों के अनियंत्रित विस्तार के परिणामस्वरूप उपजाऊ कृषि भूमि का नुकसान हो रहा है, आर्द्रभूमि (wetlands) पर अतिक्रमण हो रहा है और प्राकृतिक आवास खंडित हो रहे हैं।
- असतत कृषि पद्धतियाँ:** अत्यधिक भूजल दोहन, रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग, एक ही फसल बार-बार उगाना (Monocropping), और मिट्टी के जैविक कार्बन में लगातार गिरावट आना।
- जलवायु परिवर्तन:** वर्षा के बदलते पैटर्न और बढ़ते तापमान के कारण भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण की गति और तेज हो गई है।

सरकारी पहल (Government Initiatives)

इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण पहलें निम्नलिखित हैं:

- सॉयल हेल्थ कार्ड स्कीम (मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना)

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
- राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम (National Afforestation Programme)
- वाटरशेड विकास कार्यक्रम (Watershed Development Programme)
- इसरो (ISRO) द्वारा जारी मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण एटलस

आगे की राह (Way Forward)

सतत भूमि प्रबंधन के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

- वैज्ञानिक भूमि-उपयोग योजना (Scientific land-use planning) तैयार की जाए।
- जीआईएस (GIS)-आधारित निगरानी प्रणाली का उपयोग हो।
- कृषि-वानिकी (Agroforestry) और जलवायु-अनुकूल कृषि को बढ़ावा दिया जाए।
- सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- क्षरण वाले भूदृश्यों (degraded landscapes) को बहाल किया जाए और प्राकृतिक खेती को प्राथमिकता दी जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

भूमि एक आर्थिक संपत्ति और एक पारिस्थितिक संसाधन दोनों है। खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और समावेशी आर्थिक विकास हासिल करने के लिए भूमि का सतत प्रबंधन अपरिहार्य है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि भारत के भूमि संसाधन भविष्य की पीढ़ियों का समर्थन करते रहें, प्रौद्योगिकी, नीतिगत सुधारों और सामुदायिक भागीदारी को एकीकृत करने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक होगा।

सामान्य अध्ययन (GS) प्रश्नपत्र-4: नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि (Ethics, Integrity & Aptitude)

प्रश्न: "सत्यनिष्ठा (Integrity) का परीक्षण तब नहीं होता जब नैतिक रूप से कार्य करना सुविधाजनक हो, बल्कि तब होता है जब व्यक्तिगत हित सार्वजनिक कर्तव्य के साथ टकराव में आते हैं।" चर्चा कीजिए। उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए। (15 अंक | 250 शब्द)

मॉडल उत्तर (Model Answer)

परिचय (Introduction)

सत्यनिष्ठा लोक प्रशासन के मूलभूत मूल्यों में से एक है और यह बाहरी दबावों या व्यक्तिगत परिणामों की परवाह किए बिना नैतिक सिद्धांतों के प्रति अडिग निष्ठा का प्रतिनिधित्व करती है। एक सिविल सेवक के लिए, सत्यनिष्ठा केवल ईमानदारी से परे है; इसमें निष्पक्षता, जवाबदेही, पारदर्शिता और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में नैतिक आचरण कठिन नहीं हो सकता है, लेकिन सत्यनिष्ठा का वास्तविक पैमाना तब सामने आता है जब व्यक्तिगत हित, राजनीतिक दबाव या सामाजिक दायित्व सार्वजनिक कर्तव्य के साथ टकराते हैं।

सुशासन के स्तंभ के रूप में सत्यनिष्ठा (Integrity as the Cornerstone of Public Service)

सत्यनिष्ठा यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक शक्ति का प्रयोग केवल लोक कल्याण के लिए और संविधान तथा कानून के शासन के अनुसार किया जाए। नागरिक सार्वजनिक संस्थानों में बहुत भरोसा रखते हैं, और वह भरोसा तभी

कायम रह सकता है जब लोक अधिकारी बिना किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करें। सत्यनिष्ठा, इसलिए, सुशासन, संस्थागत वैधता और लोकतांत्रिक जवाबदेही के लिए अपरिहार्य है। सत्यनिष्ठा से युक्त एक सिविल सेवक विचार, वाणी और कर्म में निरंतरता प्रदर्शित करता है। ऐसा अधिकारी व्यक्तिगत लाभ, राजनीतिक संरक्षण या सामाजिक प्रभाव के लिए व्यावसायिक नैतिकता से समझौता नहीं करता है। इसके बजाय, उसके निर्णय कानून, निष्पक्षता और जनहित से निर्देशित होते हैं।

वे स्थितियां जहां सत्यनिष्ठा का परीक्षण होता है (Situations Where Integrity is Tested)

सत्यनिष्ठा के लिए वास्तविक चुनौती तब उत्पन्न होती है जब प्रतिस्पर्धी हित नैतिक दुविधाएं (ethical dilemmas) पैदा करते हैं:

- एक जिला मजिस्ट्रेट को कानूनी मानदंडों का उल्लंघन करके प्रभावशाली व्यक्तियों को सरकारी भूमि आवंटित करने के लिए राजनीतिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी परिस्थितियों में सत्यनिष्ठा बनाए रखने के लिए स्थानांतरण या करियर के झटकों की परवाह किए बिना वैधानिक प्रक्रियाओं का पालन करना आवश्यक होता है।
- इसी तरह, सार्वजनिक खरीद (procurement) के लिए जिम्मेदार अधिकारी को ठेकेदारों से वित्तीय प्रलोभन के प्रस्ताव मिल सकते हैं। ऐसे लाभों को स्वीकार करना पारदर्शिता से समझौता करता है और जनता के विश्वास को कम करता है। सत्यनिष्ठा अनुचित प्रभाव को खारिज करने और खरीद प्रक्रिया में निष्पक्षता बनाए रखने की मांग करती है।
- हितों का टकराव (Conflict of interest) भी महत्वपूर्ण नैतिक चुनौतियाँ पेश करता है। उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक को संस्थागत विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए करीबी रिश्तेदारों या व्यक्तिगत वित्तीय हितों से जुड़े निर्णयों से खुद को दूर (recuse) कर लेना चाहिए।

शासन में सत्यनिष्ठा का महत्व (Importance of Integrity in Governance)

सत्यनिष्ठा निम्नलिखित माध्यमों से प्रभावी शासन में महत्वपूर्ण योगदान देती है:

- प्रशासन में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना;
- संस्थानों में जनता के विश्वास को मजबूत करना;
- भ्रष्टाचार और सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग को कम करना;
- कानूनों और कल्याणकारी योजनाओं का निष्पक्ष कार्यान्वयन सुनिश्चित करना;
- संवैधानिक नैतिकता और कानून के शासन की रक्षा करना; तथा
- वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने के माध्यम से प्रशासनिक दक्षता में सुधार करना।

सत्यनिष्ठा के मार्ग में चुनौतियाँ (Challenges to Integrity)

इसके महत्व के बावजूद, सत्यनिष्ठा बनाए रखना अक्सर निम्नलिखित कारणों से कठिन होता है:

- प्रशासनिक कामकाज में राजनीतिक हस्तक्षेप;
- भ्रष्टाचार और निहित स्वार्थ (vested interests);
- व्यक्तिगत संबंधों से उत्पन्न होने वाले सामाजिक दबाव;

- ईमानदार अधिकारियों के लिए अपर्याप्त संस्थागत सुरक्षा; तथा
- बार-बार स्थानांतरण या पेशेवर अलगाव का डर।

सत्यनिष्ठा को मजबूत करने के उपाय (Measures to Strengthen Integrity)

सत्यनिष्ठा को संस्थागत सुधारों और नैतिक नेतृत्व के संयोजन के माध्यम से सुदृढ़ किया जा सकता है। पारदर्शी भर्ती और पदोन्नति प्रणाली, प्रभावी सतर्कता तंत्र, व्हिसलब्लोअर्स (सत्य उजागर करने वालों) के लिए सुरक्षा, नियमित नैतिक प्रशिक्षण, सार्वजनिक सेवाओं का डिजिटलीकरण और जवाबदेही उपायों को सख्ती से लागू करना आवश्यक है। समान रूप से महत्वपूर्ण सिविल सेवकों के प्रशिक्षण के दौरान सहानुभूति, करुणा और संवैधानिक नैतिकता जैसे मूल्यों का विकास करना है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सत्यनिष्ठा केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं बल्कि लोकतांत्रिक शासन की नैतिक नींव है। एक सिविल सेवक जो व्यक्तिगत असुविधा के बावजूद जनहित के प्रति प्रतिबद्ध रहता है, वह प्रशासन की विश्वसनीयता और संवैधानिक संस्थाओं में नागरिकों के विश्वास दोनों को मजबूत करता है। जैसा कि सही कहा गया है, नैतिक शासन अंततः इस बात पर निर्भर नहीं करता कि किस सीमा तक अधिकार का प्रयोग किया गया, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि किस सत्यनिष्ठा के साथ उस अधिकार का प्रयोग किया गया।

समसामयिक मामले (Current Affairs)

प्रश्न: समकालीन शासन सुधारों के संदर्भ में 'कंचन देवी समिति' के महत्व की चर्चा कीजिए। पारदर्शिता, जवाबदेही और कुशल लोक प्रशासन के प्रति इसके संभावित योगदान का परीक्षण कीजिए। (15 अंक | 250 शब्द)

मॉडल उत्तर (Model Answer)

परिचय (Introduction)

कंचन देवी समिति प्रशासनिक दक्षता, संस्थागत जवाबदेही और नागरिक-केंद्रित शासन में सुधार लाने के उद्देश्य से की गई अपनी सिफारिशों के कारण समकालीन शासन चर्चाओं में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरी है। हाल के वर्षों में, भारत का शासन ढांचा तेजी से पारदर्शिता बढ़ाने, सेवा वितरण को मजबूत करने और प्रक्रियात्मक बाधाओं को कम करने पर केंद्रित रहा है। समिति की सिफारिशें इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुशासन और संवैधानिक जवाबदेही के व्यापक उद्देश्यों के साथ संरेखित करने का प्रयास करती हैं।

प्रशासनिक सुधारों की आवश्यकता (Need for Administrative Reforms)

भारत की प्रशासनिक मशीनरी एक तेजी से बदलते सामाजिक-आर्थिक वातावरण के भीतर काम करती है जो तकनीकी प्रगति, बढ़ती सार्वजनिक अपेक्षाओं और विस्तारित सरकारी जिम्मेदारियों से प्रेरित है। पारंपरिक नौकरशाही संरचनाओं को अक्सर प्रक्रियात्मक देरी, कार्यों के दोहरीकरण, विभागों के बीच अपर्याप्त समन्वय और सीमित जवाबदेही तंत्र जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस पृष्ठभूमि में, शासन सुधारों की जांच करने वाली समितियां संस्थागत प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण बन जाती हैं। कंचन देवी समिति उन उपायों की सिफारिश करके इन संरचनात्मक चिंताओं को दूर करने का प्रयास करती है जो अधिक पारदर्शिता को प्रोत्साहित करते हैं, प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाते हैं और सरकार के विभिन्न स्तरों पर समन्वय में सुधार करते हैं।

समिति का महत्व (Significance of the Committee)

- **पारदर्शिता पर जोर:** समिति का एक मुख्य योगदान पारदर्शिता पर इसका विशेष ध्यान है। प्रशासनिक प्रक्रियाओं के अधिक प्रकटीकरण, डिजिटल निगरानी प्रणालियों और वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने की सिफारिश करके, समिति विवेकाधीन शक्तियों (discretion) को कम करने और भ्रष्टाचार के अवसरों को सीमित करने का प्रयास करती है।
- **संस्थागत जवाबदेही:** समिति लोक प्रशासन के भीतर जवाबदेही को मजबूत करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है। जिम्मेदारियों का स्पष्ट आवंटन, मापने योग्य प्रदर्शन संकेतक (KPIs) और संस्थागत समीक्षा तंत्र लोक अधिकारियों को उनके निर्णयों के प्रति जवाबदेह बनाते हुए प्रशासनिक जवाबदेही में सुधार कर सकते हैं।
- **नागरिक-केंद्रित शासन:** एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू नागरिक-केंद्रित शासन पर इसका जोर है। प्रक्रियाओं का सरलीकरण, प्रभावी शिकायत निवारण प्रणाली और डिजिटल गवर्नेंस प्लेटफॉर्म को व्यापक रूप से अपनाना सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता और पहुंच में काफी सुधार कर सकता है।
- **अंतर्विभागीय समन्वय:** इसके अलावा, समिति अंतर-विभागीय समन्वय और साक्ष्य-आधारित नीति कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करती है, जो कई क्षेत्रों से जुड़े जटिल विकासात्मक चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक हैं।

कार्यान्वयन में चुनौतियाँ (Challenges in Implementation)

किसी भी सुधार समिति की प्रभावशीलता अंततः उसके कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। इसमें कई चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं:

- संगठनात्मक परिवर्तन के प्रति आंतरिक प्रतिरोध;
- सरकारी विभागों के भीतर क्षमता की कमी (capacity constraints);
- अपर्याप्त वित्तीय और तकनीकी संसाधन;
- कई एजेंसियों के बीच समन्वय से जुड़े मुद्दे; तथा
- निरंतर राजनीतिक और प्रशासनिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता। प्रभावी निगरानी और समय-समय पर मूल्यांकन के बिना, बेहतरीन तरीके से तैयार की गई सिफारिशें भी सार्थक परिणाम देने में विफल हो सकती हैं।

आगे की राह (Way Forward)

सफल कार्यान्वयन के लिए संस्थागत क्षमता निर्माण, डिजिटल परिवर्तन, लोक अधिकारियों के निरंतर प्रशिक्षण और स्वतंत्र मूल्यांकन तंत्र द्वारा समर्थित एक चरणबद्ध सुधार रणनीति की आवश्यकता है। अधिक जनभागीदारी, सामाजिक अंकेक्षण (Social Audits) और पारदर्शी रिपोर्टिंग प्रणालियाँ जवाबदेही और जनता के विश्वास को और मजबूत कर सकती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

कंचन देवी समिति बेहतर पारदर्शिता, जवाबदेही और प्रशासनिक दक्षता के माध्यम से शासन को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करती है। यदि इसकी सिफारिशों को पूरी निष्ठा के साथ लागू किया जाता है, तो यह अधिक संवेदनशील, नागरिक-उन्मुख और तकनीकी रूप से सक्षम लोक प्रशासन के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। अंततः, शासन सुधारों की सफलता केवल सिफारिशों की गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि उन्हें प्रभावी सार्वजनिक नीति में बदलने की राजनीतिक इच्छाशक्ति, संस्थागत क्षमता और प्रशासनिक प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है।

